

डॉ. जेम्स एस. स्पीगल, ईसाई नैतिकता, सत्र 18, पशु अधिकार

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स स्पीगल हैं जो ईसाई नैतिकता पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 18 है, पशु अधिकार।

ठीक है, यहाँ हमारा अंतिम मुद्दा पशु अधिकार है।

और हम इस सवाल पर विचार करेंगे कि जानवरों के पास क्या अधिकार हैं, अगर कोई हैं? और इसके साथ ही, जानवरों के प्रति हमारे क्या कर्तव्य या दायित्व हैं? अब, पशु अधिकार मुद्दों से संबंधित सबसे विवादास्पद प्रथाएँ फैक्ट्री फ़ार्म और बायोमेडिकल अनुसंधान से संबंधित हैं। यहाँ कुछ फैक्ट्री फ़ार्मिंग आँकड़े दिए गए हैं। वैश्विक स्तर पर, लगभग 70 बिलियन फ़ार्म जानवरों को खाने के लिए पाला जाता है।

अमेरिका में 99% पशु फैक्ट्री में पाले जाते हैं। दुनिया भर में ज़्यादातर एंटीबायोटिक्स फ़ार्म के पशुओं को खिलाए जाते हैं। फैक्ट्री फ़ार्म में क्रूरता के तथ्य बताते हैं कि 94% अमेरिकी मानते हैं कि खाने के लिए पाले गए पशुओं को तकलीफ़ नहीं होनी चाहिए।

यह संख्या आश्चर्यजनक रूप से बहुत अधिक है, क्योंकि अमेरिकी लोग मांस का अत्यधिक उपभोग करते हैं। अमेरिका में पानी की बर्बादी का सबसे बड़ा कारण फैक्ट्री फ़ार्मिंग है। अमेरिका में लगभग 260 मिलियन एकड़ जंगल खेत जानवरों के लिए भोजन का उत्पादन करने के लिए काटा गया है।

अमेरिका में, यह अनुमान लगाया गया है कि 40% कृषि उत्सर्जन फैक्ट्री फ़ार्मों से आता है। वैश्विक स्तर पर, डेयरी गायें प्रतिदिन 3.7 बिलियन गैलन मलमूत्र का उत्पादन करती हैं, जिसे पर्यावरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव के रूप में देखा गया है। इनमें से कई मुद्दे पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण हैं।

समकालीन पशु अधिकार आंदोलन के जनक पीटर सिंगर हैं। 1975 में अपनी पुस्तक एनिमल लिबरेशन में उन्होंने पशु अधिकारों के लिए तर्क दिया। उन्होंने फैक्ट्री फ़ार्मिंग के बारे में पाठकों को तथ्य बताने में काफ़ी समय बिताया।

इसलिए, उनका सिद्धांत यह है कि सभी जानवरों को समान सम्मान मिलना चाहिए। सभी जानवरों को समान सम्मान मिलना चाहिए। उनका कहना है कि समानता एक नैतिक विचार है।

यह कोई तथ्य नहीं है, जो स्पष्ट रूप से स्पष्ट प्रतीत होता है। वास्तव में, कोई भी दो व्यक्ति शारीरिक या बौद्धिक दृष्टिकोण से बिल्कुल समान नहीं होते। लेकिन समानता एक ऐसी चीज है जिसे हम सभी अपने समाज में एक महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण मूल्य और आदर्श के रूप में मानते हैं।

उन्होंने कहा कि यह एक नैतिक विचार है, न कि तथ्य का दावा। दूसरों के लिए चिंता उनकी क्षमताओं पर निर्भर नहीं होनी चाहिए। यह बात जानवरों पर भी लागू होती है।

इस वजह से, हमें प्रजातिवाद की निंदा करनी चाहिए। उन्होंने प्रजातिवाद शब्द गढ़ा, जो एक निश्चित अर्थ में लिंगवाद या नस्लवाद जैसा है। यह उन लोगों को टैग करने का एक तरीका है जो एक खास तरह के पूर्वाग्रह या कट्टरता के दोषी हैं।

वह प्रजातिवाद को अपनी प्रजाति के सदस्यों के हितों के प्रति और अन्य प्रजातियों के सदस्यों के हितों के प्रति पूर्वाग्रह या पक्षपातपूर्ण रवैये के रूप में परिभाषित करते हैं। इसलिए, हमें उस पूर्वाग्रह को बनाए नहीं रखना चाहिए। यह एक स्वाभाविक बात है। उनका तर्क है कि सिर्फ इसलिए कि हम प्रजातिवाद के प्रचलन का एक प्राथमिक कारण हैं।

हम मनुष्य के रूप में नियंत्रण में हैं। हम गायों, सूअरों, मुर्गियों और अन्य जानवरों को नियंत्रित करते हैं। इसलिए, इन जानवरों की कीमत पर खुद को और अपने हितों को लाभ पहुंचाना आसान है, क्योंकि हमारे पास उच्च संज्ञानात्मक कार्य हैं और हम नियंत्रण में हैं।

लेकिन यह ऐसा कुछ नहीं है जो हमारे हिस्से पर किसी भी तरह के नैतिक विशेषाधिकार को उचित ठहराता है। वह कहते हैं, उनका हवाला देते हुए, कि दुख और आनंद की क्षमता हितों के लिए एक शर्त है। और कोई भी प्राणी जो सिर्फ इस तथ्य के कारण पीड़ित हो सकता है कि वे पीड़ित हैं, यह पहचानने के लिए पर्याप्त कारण है कि उनके पास अधिकार हैं।

अगर कोई जानवर पीड़ित हो सकता है, तो उसके हित भी होंगे। और अगर उसके हित हैं, तो उसके अधिकार भी होंगे। उनका कहना है कि दूसरों के लिए चिंता की सीमा को किसी अन्य विशेषता, जैसे बुद्धि या तर्कसंगतता, द्वारा चिह्नित करना मनमाने ढंग से चिह्नित करना होगा, इसलिए हमें यह निर्धारित करने के लिए कौन सा मानदंड चुनना चाहिए कि दूसरे प्राणी के लिए चिंता कहाँ उचित है? उनका कहना है कि हम जो भी मानदंड चुनें, जीवन का अधिकार रखने वालों में हमारी अपनी प्रजाति के सभी और केवल सदस्य शामिल नहीं होंगे।

अगर हम उच्च स्तनधारियों को इसलिए खारिज कर देते हैं क्योंकि उनके पास एक निश्चित स्तर की बुद्धि नहीं होती, तो ऐसा करके हम कुछ मनुष्यों को भी खारिज कर देंगे क्योंकि कुछ उच्च स्तनधारी, उच्च प्राइमेट हैं जो अपनी उम्र या विकास संबंधी समस्याओं के कारण कुछ मनुष्यों से अधिक बुद्धिमान हैं, जब संज्ञानात्मक विकास संबंधी विकलांगता होती है। इसलिए, सिंगर का तर्क है कि हमारे पास सबसे अच्छा मानदंड पीड़ा सहने की क्षमता है। लेकिन, वह इस आपत्ति से निपटता है: क्या होगा अगर जानवर पीड़ा सहने में असमर्थ हैं? क्या होगा अगर डेसकार्टेस सही है, और जानवर मूल रूप से मशीन हैं; उनमें कोई चेतना नहीं है, और पीड़ा सहने की कोई क्षमता नहीं है? सिंगर का इस पर दोहरा जवाब है।

हमारे पास यह मानने के अच्छे कारण हैं कि जानवर भी पीड़ा झेल सकते हैं, बस एक उदाहरण के तौर पर। जब हम देखते हैं कि वे कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, तो अगर आप किसी कुत्ते या बिल्ली

की पूंछ पर पैर रखते हैं, तो वह चिल्लाएगा या चीखेगा। यह उस तरह का व्यवहार है जो दर्द का अनुभव करने और नकारात्मक मानसिक स्थिति के अनुरूप है।

तो, यह बात है। और फिर, हम यह भी जानते हैं, सिर्फ शारीरिक समानताओं से, कि जानवर दर्द महसूस करते हैं। उनका केंद्रीय तंत्रिका तंत्र हमारे जैसा ही है, खास तौर पर स्तनधारियों में, इसलिए उन्हें भी दर्द और खुशी का एहसास हमारी तरह ही होता है।

इसलिए, जानवर दुख सहने में सक्षम हैं, और वे आनंद का अनुभव करने में भी सक्षम हैं। उन्होंने कहा कि जबकि दुख सहने की क्षमता का अर्थ है कि जानवरों को नैतिक विचार मिलना चाहिए, इसका यह अर्थ नहीं है कि उन्हें भी वही नैतिक विचार मिलना चाहिए जो मनुष्यों को मिलना चाहिए। इसलिए, वह यहाँ अपनी स्थिति को थोड़ा स्पष्ट करते हैं।

पशु अधिकारों के एक अन्य समर्थक टॉम रेगन हैं, जो एक अलग तरह का तर्क देते हैं। यह सिंगर की तरह उपयोगितावादी तर्क पर आधारित नहीं है। रेगन का तर्क है कि सभी जानवरों का समान अंतर्निहित मूल्य है, क्योंकि उनमें एक तरह की बुनियादी जागरूकता और चेतना की स्थिति होती है।

इसलिए, उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाना चाहिए। वे जीवन के अनुभव करने वाले विषय हैं, और यह गारंटी देने के लिए पर्याप्त है कि उनके पास कुछ अधिकार हैं। उनका कहना है कि अंतर्निहित मूल्य मनुष्यों तक सीमित नहीं हो सकते क्योंकि हम कई मामलों में अन्य जानवरों के समान हैं।

हम साथी मनुष्यों को मूल्यवान मानते हैं क्योंकि हममें से प्रत्येक जीवन का अनुभव करने वाला विषय है। लेकिन फिर, क्यों न इसे अन्य जानवरों तक बढ़ाया जाए जो जीवन के अनुभव करने वाले विषय हैं? उनका कहना है कि सभी को सम्मान के साथ व्यवहार किए जाने का समान अधिकार है और उन्हें किसी वस्तु के दर्जे तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए। अब, यहाँ एक आपत्ति यह हो सकती है कि, नहीं, केवल मनुष्यों में ही अंतर्निहित मूल्य है क्योंकि केवल हमारे पास अपेक्षित बुद्धि, स्वायत्तता और तर्क है।

बेशक, मेरे कुत्ते ऑस्टिन को वास्तविक अनुभव हैं और वह दर्द और खुशी आदि महसूस करता है, लेकिन वह वास्तव में बुद्धिमान नहीं है, निश्चित रूप से स्वायत्त नहीं है। वह पहले से तय लक्ष्यों या उद्देश्यों और विचारों के लिए काम नहीं करता। वह तर्क नहीं कर सकता।

इस तरह के तर्क पर रेगन का जवाब है, जैसा कि सिंगर ने कहा है, कई मनुष्यों में ये क्षमताएँ नहीं होती हैं, उदाहरण के लिए शिशु और मानसिक रूप से विकलांग वयस्क। फिर भी, हम मानते हैं कि उनमें अंतर्निहित मूल्य है। इसलिए, अगर हम गंभीर रूप से मानसिक रूप से विकलांग शिशुओं या वयस्क मनुष्यों के साथ-साथ शिशुओं में भी अंतर्निहित मूल्य की मान्यता का विस्तार करने जा रहे हैं, तो हमें इसे जानवरों तक भी विस्तारित करना चाहिए।

इसलिए, रेगन का तर्क है कि जिन लोगों में अंतर्निहित मूल्य है, उन सभी के पास समान रूप से मूल्य है, चाहे वे मानव पशु हों या नहीं। एक और आपत्ति यह है। हमें यह दावा क्यों स्वीकार

करना चाहिए कि जिन लोगों में अंतर्निहित मूल्य है, उनके पास समान रूप से मूल्य है? यह कुछ ऐसा है जिसे रेगन कभी प्रदर्शित नहीं करते हैं, और यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ उन्हें, मैं यह कहना चाहूँगा, पीटर सिंगर की तरह यह पहचानना चाहिए कि सभी अधिकार, या इस मामले में, अंतर्निहित मूल्य, समान नहीं हैं।

बेशक, मैं यह स्वीकार कर सकता हूँ कि कुत्ते या बिल्ली या चिम्पांजी का अंतर्निहित मूल्य होता है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि इन जानवरों का अंतर्निहित मूल्य इंसानों जितना ही है। अब, बायोमेडिकल रिसर्च के सवाल के तहत, हम पूछ सकते हैं कि जानवरों पर बायोमेडिकल रिसर्च की नैतिकता के बारे में क्या? क्या यह नैतिक रूप से स्वीकार्य है? कई मजबूत पशु अधिकार समर्थक हैं जो इसका विरोध करेंगे। मैं मानता हूँ कि रेगन और सिंगर इसका विरोध करेंगे, क्योंकि पशु अधिकारों के लिए उनके तर्कों के तर्क में स्पष्ट कारण हैं।

आर.जी. फ्राई चिकित्सा अनुसंधान में जानवरों के उपयोग का समर्थन करते हैं, और दिलचस्प बात यह है कि वे अधिकारों की अवधारणा का सहारा लिए बिना अपनी स्थिति का बचाव करते हैं, जिसके बारे में उनका मानना है कि यह समस्याओं से भरा हुआ है। उनका तर्क जीवन की गुणवत्ता की धारणा पर आधारित है, जो मुझे माफ कीजिए, किसी भी नैतिक विचारधारा के लोग इसकी पुष्टि कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि यह किसी प्राणी की जीवन की गुणवत्ता है जो यह निर्धारित करती है कि वह नैतिक विचार के योग्य है या नहीं।

उनका कहना है कि नैतिक स्थिति इस बात पर निर्भर करती है कि कोई प्राणी अनुभवात्मक विषय है या नहीं, जिसके अनुभवों की एक श्रृंखला है, जो उनकी गुणवत्ता के आधार पर प्राणी के जीवन को अच्छा या बुरा बना सकती है। उनका कहना है कि जीवन का मूल्य उसकी गुणवत्ता, उसकी समृद्धि की गुणवत्ता और उसकी क्षमताओं या समृद्धि के दायरे की समृद्धि पर निर्भर करता है। और क्योंकि जानवरों के जीवन में एक निश्चित गुणवत्ता होती है, इसलिए उनके जीवन का मूल्य होता है, लेकिन एक सामान्य वयस्क मानव जीवन जितना मूल्य नहीं होता।

मुझे लगता है कि यह एक तरह की योग्यता है जिसके लिए रेगन जैसे व्यक्ति को खुला होना चाहिए। फ्राई ने सिंगर द्वारा सुझाई गई धारणा को चुनौती दी है कि यह प्रजातिवादी है क्योंकि यह मानव प्रजाति से संबंधित होने के आधार पर नहीं है कि हमारे जीवन का जानवरों की तुलना में अधिक मूल्य है। यह सिर्फ इस तथ्य पर आधारित है कि हमारे पास जीवन की एक निश्चित गुणवत्ता है।

अब, यह फ्राय के दृष्टिकोण के संबंध में कुछ दिलचस्प सवाल उठाता है क्योंकि हम पूछ सकते हैं, ठीक है, उन मनुष्यों के बारे में क्या जिनके पास जीवन की समान गुणवत्ता नहीं है? वे लोग जो विकासात्मक रूप से अक्षम हैं, उनके पास जीवन की गुणवत्ता का वही स्तर नहीं है जो हम बाकी लोगों के पास है जिनके पास एक निश्चित उच्च संज्ञानात्मक कार्य है। और यही कारण है कि फ्राय वास्तव में यह स्वीकार करते हैं कि कुछ मानव विषयों पर प्रयोग करना, जैसे हम जानवरों पर प्रयोग करते हैं, उचित होगा, जो, मुझे लगता है, उनके दृष्टिकोण को बेतुकेपन तक कम करने का एक प्रकार है, कम से कम एक यहूदी-ईसाई दृष्टिकोण से, कि वह उस दृष्टिकोण को अपनाएंगे। लेकिन वह गोली का सामना करता है।

मुझे इसके लिए उन्हें श्रेय देना होगा। लेकिन बायोमेडिकल रिसर्च और जानवरों पर प्रयोग के मामले में उनका यही दृष्टिकोण है। तो, एंड्रयू टार्डिफ, आइए अब शाकाहार के लिए उनके मामले पर आते हैं।

वह शाकाहार के प्रति दायित्व की वकालत करते हैं। वह ऐसा धार्मिक तर्क का उपयोग करके करते हैं। उनका कहना है कि भोजन के लिए जानबूझकर जानवरों को मारने या उन्हें खरीदने से बचना चाहिए, भले ही कोई उन्हें खुद न मारे।

सहायता प्राप्त आत्महत्या के संदर्भ में बात कर चुके हैं : दोहरे प्रभाव का सिद्धांत। और वह इस संदर्भ में थॉमस हिगिंस नामक विद्वान से कुछ सीख लेते हैं।

इसलिए, वह बताते हैं कि दोहरे प्रभाव के सिद्धांत के अनुसार, अपेक्षाकृत महत्वहीन अच्छाई के लिए गंभीर बुराई की अनुमति देना उचित नहीं होगा। जैसा कि टार्डिफ कहते हैं, भले ही कोई अच्छाई प्रश्रुत बुराई से अधिक हो, लेकिन कार्रवाई गैरकानूनी है, अगर, उद्धरण, अच्छा प्रभाव बुरे प्रभाव के बिना प्राप्त किया जा सकता था। यह दोहरे प्रभाव के सिद्धांत के भीतर एक शर्त के साथ करना है, जो यह है कि अच्छाई प्राप्त करने का साधन बुरा नहीं होना चाहिए।

आपको अच्छा प्रभाव प्राप्त करने के साधन के रूप में बुराई का उपयोग नहीं करना चाहिए। इसलिए, वह अपने तर्क में, अस्तित्व के पदानुक्रम के पूरे विचार को अपील करते हुए बताते हैं कि निर्मित व्यवस्था में, अधिक से अधिक मूल्य और महत्व वाले प्राणियों का एक प्रकार का पदानुक्रम है, निर्जीव प्रकृति से लेकर, सूक्ष्म जीवों से लेकर कीड़े-मकौड़े, मछली, उभयचर, सरीसृप, स्तनधारी, मनुष्य, और फिर देवदूत क्रम से लेकर ईश्वर तक। तो, अस्तित्व का एक प्रकार का पदानुक्रम है।

यह विचार मध्यकाल में बहुत अधिक प्रचलित था, लेकिन उनका मानना है कि आज यहूदी-ईसाई परंपरा से आने वाले लोगों को भी इस पर यकीन करना चाहिए। इसलिए मनुष्य उस पदानुक्रम में जानवरों से ऊपर है, जो पौधों से ऊपर है, जो निर्जीव चीजों से ऊपर है। हमें मूल्यों के इस पदानुक्रम का सम्मान करना चाहिए जब भी संभव हो।

इसे पदानुक्रम में अपने स्थान के अनुसार प्रत्येक प्रकार के जीव को उचित रूप से देखना चाहिए। यही कारण है कि हममें से अधिकांश लोग मक्खी को मारने या मच्छर को मारने के बारे में दो बार नहीं सोचते। लेकिन अगर कोई कुत्ते या बिल्ली या यहाँ तक कि पक्षी को भी मार दे तो हम भयभीत हो जाएँगे क्योंकि हम सहज रूप से पहचानते हैं कि वहाँ एक पदानुक्रम है।

यदि आप किसी जानवर को मारने जा रहे हैं, तो, आप जानते हैं, लानत है, आपके पास ऐसा करने के लिए अच्छे कारण होने चाहिए। लेकिन हम कभी भी लोगों से अच्छे कारण नहीं मांगते हैं जब वे चींटी पर पैर रखते हैं या मक्खी को मारते हैं। इसलिए जब हम इस पदानुक्रम की धारणा को दोहरे प्रभाव के सिद्धांत के साथ जोड़ते हैं, तो ऐसा लगता है कि, टार्डिफ के अनुसार, जब भी कोई व्यक्ति जानवरों के बजाय पौधों को मारकर अपने उद्देश्यों को पूरा कर सकता है, तो वह

जानवरों को नहीं मार सकता है, क्योंकि वे पौधों से बेहतर हैं, उन परिस्थितियों में ऐसा करना आवश्यक हिंसा से अधिक होगा।

दूसरे शब्दों में, वे कहते हैं कि जीवन और स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए जानवरों को मारना आनुपातिक भलाई की शर्त का उल्लंघन होगा क्योंकि यह उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जानवरों को नष्ट करना होगा जो कम वस्तुओं और पौधों की कीमत पर प्राप्त किए जा सकते हैं। इसलिए, उन्हें कुछ और उद्धृत करते हुए, टार्डिफ कहते हैं कि जो कोई भी शाकाहारी भोजन पर अच्छी तरह से रह सकता है, उसे, अन्य चीजें समान होने पर, इसे अपनाने के लिए बाध्य होना चाहिए क्योंकि यह विकल्प उसके जीवन और स्वास्थ्य के सबसे बड़े लाभों को सुरक्षित करेगा जबकि कम से कम बुराई करेगा। तो मूल रूप से, विचार यह है कि आप अपने जीवन में पौधों के उत्पादों को खाकर उतना ही स्वास्थ्य और कल्याण प्राप्त कर सकते हैं जितना आप पशु उत्पादों को खाकर कर सकते हैं।

यदि आप पूरी तरह से शाकाहारी भोजन करते हैं और मांस खाने से बचते हैं, तो आप जानवरों के साथ क्रूरता करने या उनकी पीड़ा बढ़ाने से बचकर बहुत अच्छा कर रहे हैं। शारीरिक रूप से, आप उतना ही अच्छा कर रहे हैं जितना आप अन्यथा कर सकते थे। यह एक और तर्क को अनदेखा करता है कि शाकाहारी भोजन वास्तव में स्वस्थ है।

कुछ लोग इन आधारों पर बहस करते हैं, और जब वे इसके पोषण संबंधी आयाम के बारे में बात करते हैं, तो वे वास्तव में इसका उल्लेख करते हैं। इस तर्क को आगे बढ़ाने के लिए आपको पोषण के लिए कोई तर्क देने की ज़रूरत नहीं है। वे कहते हैं कि शाकाहारी भोजन, कम से कम, सर्वाहारी, मांसाहारी के भोजन जितना ही पौष्टिक होता है।

और उन्होंने कहा कि, अगर कुछ भी हो, तो यह एक स्वस्थ आहार है। इतना अधिक कि आमतौर पर यह माना जाता है कि जब कोई व्यक्ति शाकाहारी बनता है, तो यह स्वास्थ्य कारणों से होता है। मुझे पता है कि मैं क्रूरता-मुक्त आहार का अभ्यास करता हूँ।

मैं आमतौर पर फैक्ट्री में तैयार मांस से परहेज करता हूँ। और जब मैं लोगों को बताता हूँ कि मैं आमतौर पर मांस खाने से परहेज करता हूँ, तो वे कहेंगे, आप ऐसा स्वास्थ्य कारणों से करते हैं या किसी और कारण से? क्योंकि वे जानते हैं कि आहार में मांस से परहेज करने या उसे कम करने से अक्सर जबरदस्त स्वास्थ्य लाभ होते हैं। ठीक है, आप इस तरह का तर्क दे सकते हैं, लेकिन उनके तर्क के लिए, आपको इसकी ज़रूरत नहीं है।

नैतिक तर्क यह है कि यह पर्याप्त है। दूसरा विचार उपलब्धता का है। हमारी संस्कृति में, जैसा कि अधिकांश विकसित देशों में है, हमारे पास बहुत सारे गैर-पशु खाद्य उत्पादों तक सुविधाजनक पहुंच है।

और हम साल भर बहुत ही पौष्टिक शाकाहारी भोजन खा सकते हैं। इसलिए पश्चिमी देशों में यह हमारे लिए चिंता की बात नहीं है। मुझे नहीं पता कि क्या यह अन्य देशों के लिए भी उतनी ही चिंता की बात होगी।

मुझे बताया गया है कि निश्चित रूप से यह अधिक कुशल है। अनाज, सब्जियाँ और फल खाना उन जानवरों का मांस खाने से कहीं अधिक कुशल है जो इन सभी अनाजों को खाते रहे हैं। और इनमें से बहुत से अनाज वास्तव में प्रोटीन प्रदान करते हैं।

खास तौर पर, नट्स और दूसरे गैर-पशु उत्पाद बहुत ज़्यादा प्रोटीन दे सकते हैं। यहाँ कुछ आपत्तियाँ दी गई हैं जो कभी-कभी की जाती हैं। एक आपत्ति है आनंद से।

मांस का स्वाद अच्छा होता है। मांस चबाने में अच्छा लगता है। और स्टेक या पोर्क, पोर्क चॉप या बेबी बैक रिब्स से आपको जो स्वाद मिलता है, वह अच्छा होता है।

बहुत से लोग वास्तव में मांस खाने से मिलने वाले आनंद पर जोर देंगे। क्या यह इसे पाने के लिए जानवरों को मारने का एक आनुपातिक कारण प्रदान नहीं करता है? टार्डिफ ने यह कहते हुए विरोध किया कि बहुत सारे स्वादिष्ट मांस-मुक्त खाद्य पदार्थ हैं और मांस खाने का आनंद इतना बढ़िया नहीं है, कि किसी जानवर के साथ क्रूरता करना उसे उचित ठहराए। इन कुछ पौधे-आधारित हैमबर्गर विकल्पों के आगमन के साथ, मुझे लगता है कि यह तर्क उनके पक्ष में विशेष रूप से मजबूत है।

मैं असंभव वॉपर का बहुत बड़ा प्रशंसक हूँ, और मुझे ऐसा कहने के लिए बर्गर किंग या किसी और ने पैसे नहीं दिए हैं, लेकिन यह मेरे लिए आश्चर्यजनक है कि यह चीज़ असली वॉपर की तरह कितनी स्वादिष्ट है। मैं अंतर नहीं बता सकता। इसलिए, मैं शायद हर दो हफ़्ते में कम से कम एक बार खाता हूँ, और मुझे एक असंभव वॉपर बर्गर मिल जाएगा।

मुझे लगता है कि आज दोपहर को मुझे एक मिल सकता है। वास्तव में, मैंने खुद को इसके लिए भूखा बना लिया है। लेकिन यह आश्चर्यजनक है कि अब हमारे पास जो तकनीक है, उससे हम मांस के विकल्प बना सकते हैं।

मेरे खयाल से, इसका स्वाद असली चीज़ जितना ही अच्छा है, और यह स्वास्थ्यवर्धक भी है क्योंकि इसमें वे सभी नाइट्राइट और नाइट्रेट नहीं होते जो असली लाल मांस में होते हैं। वैसे भी, भले ही मांस खाने में काफ़ी ज़्यादा मज़ा हो, टार्डिफ़ का तर्क है कि यह इतना भी नहीं है कि इसके लिए किसी जानवर को मारना पड़े। एक और आपत्ति आर्थिक आपत्ति है।

अगर सभी लोग शाकाहारी बन जाएं, तो इससे आर्थिक उथल-पुथल मच जाएगी। यह एक चिंता है जो कुछ लोग व्यक्त करते हैं। मुझे नहीं पता कि वे इस तर्क को कितनी गंभीरता से लेते हैं, लेकिन कभी-कभी आप इसे सुनते हैं।

जवाब में, टार्डिफ़ कहते हैं कि भले ही सभी लोग शाकाहारी बन जाएं, लेकिन अगर यह अचानक हुआ तो इससे आर्थिक समस्याएं ही पैदा होंगी। ऐसा नहीं होने वाला है कि कल अचानक सभी लोग शाकाहारी बन जाएं, या यहां तक कि आबादी का एक बड़ा हिस्सा शाकाहारी बन जाए। यह बहुत धीरे-धीरे होगा, और बाजार समायोजित हो जाएगा।

देखिए कि रेस्टोरेंट और किराना स्टोर के मामले में यह पहले से ही कितना हुआ है। उन्होंने शाकाहारी विकल्प देने के मामले में बदलाव किए हैं क्योंकि इसकी मांग बढ़ गई है। बाजार समायोजित हो जाएगा, और यह धीरे-धीरे होगा, इसलिए इसके परिणामस्वरूप आर्थिक आपदा के बारे में चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

अगर लोग ऐसा करते हैं, तो ठीक है, क्योंकि लोग इस मुद्दे के प्रति अधिक संवेदनशील होते जा रहे हैं और तदनुसार अपने खाने की आदतों को बदल रहे हैं। खैर, आइए अब जानवरों की देखभाल के लिए बाइबिल के तर्कों पर नज़र डालें। बाइबिल के दृष्टिकोण से इस मुद्दे के बारे में हमारी सोच में किस तरह के विचार होने चाहिए? एक बिंदु जिससे हम शुरुआत कर सकते हैं वह ईश्वरीय स्वामित्व से संबंधित है, जो यह है कि इस दुनिया में सब कुछ ईश्वर का है।

वह पूरे ब्रह्मांड का स्वामी है, और इसमें पृथ्वी ग्रह और उसमें मौजूद हर चीज़ शामिल है, जिसमें मनुष्य और हर पहाड़ी पर रहने वाले हर जानवर और हर पक्षी और हर पेड़ शामिल हैं, जैसा कि भजनकार ने भजन 50 में कहा है। एक और भजन कहता है कि पृथ्वी और उसमें मौजूद हर चीज़ प्रभु की है। इसलिए, भगवान सब कुछ के मालिक हैं, और प्रकृति के किसी भी पहलू के प्रति अनादर भगवान के प्रति अप्रत्यक्ष अनादर है।

जानवरों के साथ क्रूर व्यवहार न केवल उनके प्रति, बल्कि भगवान के प्रति भी अपमानजनक है। इसलिए, हमारा कर्तव्य है कि हम उनके साथ मानवीय व्यवहार करें। दूसरे, जानवरों के साथ व्यवहार से संबंधित दिव्य आदेश हैं जिन्हें अनदेखा करना आसान है।

परंपरागत रूप से उन्हें वास्तव में उजागर नहीं किया गया है, लेकिन वे शास्त्र में मौजूद हैं। बाइबल हमें जानवरों की देखभाल के बारे में विशिष्ट निर्देश देती है। उनमें से एक निर्गमन 23 में दिखाई देता है, जहाँ परमेश्वर इस्राएलियों को जानवरों के लिए सब्त के विश्राम को बढ़ाने का आदेश देता है।

बैल, बैल और गधे को भी आराम करना चाहिए। व्यवस्थाविवरण 25:4 कहता है कि अनाज रौंदते समय बैल का मुंह न बांधें। और नीतिवचन 12:10 कहता है कि धर्मी लोग अपने पशुओं की ज़रूरतों का ध्यान रखते हैं।

यह एक ऐसा काम है जो एक धर्मी व्यक्ति करता है, और वे अपने जानवरों की देखभाल करते हैं। मैं हर सुबह उस श्लोक के बारे में सचमुच सोचता हूँ जब मैं अपने पिछवाड़े में मुर्गीघर में जाता हूँ जहाँ हमारी चार मुर्गियाँ रहती हैं। और मैं उन्हें उनकी मुर्गियों की खरोंच देता हूँ और उन्हें पिंजरे के अंदरूनी हिस्से से बाहर निकाल देता हूँ।

मैं इस मामले में भी एक नेक इंसान बनने की कोशिश कर रहा हूँ, इन बहुत ही नासमझ जानवरों की देखभाल कर रहा हूँ। मुर्गियाँ बहुत ही बेवकूफ़ जानवर हैं, विचित्र छोटे जानवर। लेकिन मेरा कर्तव्य है, भले ही वे बहुत कम बुद्धिमान हों, उनकी देखभाल करना और उनकी ज़रूरतों को पूरा करना, जैसा कि मैं अपनी बिल्ली और कुत्ते के लिए करता हूँ।

और यह बाइबिल के आदेश को पूरा करने का एक हिस्सा है, सृष्टि की देखभाल करने का सांस्कृतिक आदेश। लेकिन जानवरों की देखभाल के बारे में शास्त्र में दिए गए इन विशिष्ट आदेशों को जानना दिलचस्प है। फिर, हम पहले ही विचारों के पदानुक्रम के बारे में बात कर चुके हैं, जो ऐसे प्राणी हैं जो अपनी विभिन्न पूर्णता के संदर्भ में भिन्न हैं।

किसी भी प्राणी के साथ हमारे व्यवहार की औचित्यता का मूल्यांकन पदानुक्रम में उसके स्थान के अनुसार किया जा सकता है, जैसा कि हमने टार्डिफ के तर्क के साथ चर्चा की थी। तो, यहाँ नतीजा क्या है? तर्क यह दिया जा सकता है कि जानवरों के प्रति हमारा दोहरा नैतिक कर्तव्य है।

भले ही हम यह कहने की हद तक न जाएं कि जानवरों के भी अधिकार हैं, जो कि मैं जानवरों के बारे में नहीं कहूंगा, लेकिन यह एक बहुत ही कठोर शब्द लगता है। अधिकांश पशु कल्याण धर्मशास्त्रियों, जैसे कि दिवंगत महान स्टीफन वेब, जो मेरे मित्र हैं, ने इस विषय पर बहुत कुछ लिखा है।

एंड्रयू लिंडसे और अन्य लोग भाषा अधिकारों से बचते हैं। वे पशु कल्याण, पशु देखभाल और करुणा के बारे में अधिक बात करना पसंद करते हैं। मुझे लगता है कि यही सही तरीका है।

जानवरों के प्रति हमारा दोहरा कर्तव्य है। पहला, उनकी देखभाल इस तरह से करना कि ईश्वर का सम्मान हो। वे ईश्वर के पालतू जानवर हैं।

और अगर आप शिकार करने जा रहे हैं, तो वहां दर्द और पीड़ा को कम करने के मामले में ऐसा करने का एक सही तरीका है। ऐसा करने के कई गैर-जिम्मेदाराना तरीके हैं। और अगर आप किसी और तरीके से प्राप्त मांस खाने जा रहे हैं, तो ऐसी व्यवस्था का समर्थन करने से बचें जो इतनी पीड़ा का कारण बनती है।

ऐसे कई तरीके हैं जिनसे हम पशु उत्पादों और प्रसंस्करण का समर्थन कर सकते हैं जो स्वाभाविक रूप से क्रूर नहीं हैं। फ्री-रेंज का मतलब है फ्री-रेंज पोर्क, चिकन और बीफ। यह कुछ ऐसा है जिसका हम समर्थन कर सकते हैं।

या फिर मांस खाने से पूरी तरह परहेज़ करें। तो, इसका दूसरा हिस्सा जानवरों के साथ इस तरह से व्यवहार करना होगा जो उनकी ज़रूरतों और पीड़ा सहने की क्षमता वाले सचेत प्राणियों के रूप में उनकी प्रकृति के अनुकूल हो। अगर हम इन बातों को ध्यान में रखते हैं, तो इसका मतलब शायद किसी के खरीदने और खाने के व्यवहार में कुछ समायोजन होगा।

लेकिन यह मेरी सिफारिश होगी। यह पशु कल्याण के बारे में एक तरह का गंभीर विचार है। यह हमें फैक्ट्री फार्मों के प्रति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमारे समर्थन पर पुनर्विचार करने के लिए भी प्रेरित करेगा।

फैक्ट्री फार्मों में, बड़ी संख्या में जानवरों को संसाधित किया जाता है, और इसमें अक्सर या आम तौर पर एक निश्चित मात्रा में क्रूरता शामिल होती है। सर्कस। अक्सर, इन संदर्भों में जानवरों को यातनापूर्ण तरीकों से प्रशिक्षित किया जाता है।

सर्कस में कई सालों तक कुछ ऐसा किया जाता था, कम से कम कुछ संदर्भों में, जो इसे दर्शाता है। जैसे, एक गधा या घोड़ा ऊंची छलांग लगाता है, पानी में गिरता है, और ऐसा बिना किसी ज्यादा बल के होता है। शायद थोड़ा सा प्रेरित होने पर।

लेकिन सोचिए कि किसी जानवर को स्वेच्छा से ऐसा करने के लिए प्रशिक्षित करने में क्या लगेगा। और इसके लिए बिजली के डंडे का इस्तेमाल किया जाएगा। पानी के उस कुंड में कूदना जानवर के लिए जितना डरावना होगा, उतना ही डरावना भी होगा।

यह बिजली के झटके से मरने से बेहतर है। लेकिन आज भी, विभिन्न स्थानों पर सर्कसों में, जानवरों को हर तरह की अप्राकृतिक, बहुत अप्राकृतिक चीजें करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, भले ही वे देखने में मनोरंजक हों, वे बहुत अप्राकृतिक हैं। और बहुत से मामलों में, यह कठोर व्यवहार और दुर्व्यवहार के कारण होता है जिसके कारण प्रशिक्षक उनसे ऐसे स्टंट करवा पाते हैं।

जाल लगाना। जानवरों को उनके फर के लिए पकड़ने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले जाल, खास तौर पर, अक्सर बहुत क्रूर होते हैं। और भले ही ऐसे कानून हैं जो इस बारे में दिशा-निर्देश देते हैं कि जाल कैसे लगाए जाने चाहिए और उन्हें कितनी बार जांचना चाहिए, लेकिन उनका बहुत अच्छी तरह से पालन नहीं किया जाता है।

इसलिए, कई मामलों में, जानवरों को घंटों या दिनों तक क्रूर तरीकों से फँसाकर पीड़ा सहन करने के लिए छोड़ दिया जाता है। और फिर अंत में, पशु अनुसंधान के मामले में, कई जानवरों को संदिग्ध शोध के लिए प्रताड़ित किया जाता है। मस्तिष्क की चोटों और कैसर पर शोध करने या शल्य चिकित्सा तकनीकों के मामले में लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए जानवरों का उपयोग करना एक बात है।

यह एक बात है। लेकिन कॉस्मेटिक्स का परीक्षण करने के लिए जानवरों पर दर्दनाक, यहां तक कि बेहद दर्दनाक शोध करना, जैसा कि आमतौर पर खरगोशों के साथ किया जाता है, जहां उनकी आंखों में कुछ कॉस्मेटिक डाला जाता है, और खरगोशों को इस तरह से बांध दिया जाता है कि वे इससे दूर न जा सकें। वे इस पर हिंसक प्रतिक्रिया कर रहे हैं, लेकिन जब इन कॉस्मेटिक्स का परीक्षण किया जा रहा होता है तो वे अपनी आंखों में होने वाले दर्द को कम करने के लिए कुछ नहीं कर सकते।

मेरा मतलब है, यह सौंदर्य प्रसाधन है। यह मानव विकास के लिए आवश्यक नहीं है। इसलिए, यह देखने लायक है कि किस तरह के उत्पाद इन तरह की चीजों पर निर्भर करते हैं या नहीं।

और कई उत्पादों पर यह संकेत देने के लिए लेबल लगाया जाता है कि वे फैक्ट्री में तैयार नहीं किए गए हैं या वे फ्री रेंज में हैं। आपको फ्री-रेंज चिकन अंडे और फ्री-रेंज चिकन मांस मिलते हैं, और यही हम फैक्ट्री में तैयार किए गए अंडों के विपरीत खरीदते हैं। और हमें अपने पिछवाड़े में मुर्गियों से अंडे मिलते हैं, जो स्टोर पर मिलने वाले अंडों की तुलना में स्वाद में काफी बेहतर होते हैं।

इसलिए, यदि आप स्वाद, स्वाद और सौंदर्य आयाम के बारे में चिंतित हैं, तो क्रूरता-मुक्त या मानवीय रूप से पाले गए पशु उत्पादों के पक्ष में एक और निशान है। यहाँ कुछ ऑनलाइन संसाधन दिए गए हैं जिन्हें आप देख सकते हैं। एक है क्रिश्चियन वेजिटेरियन एसोसिएशन।

जीसस पीपल फॉर एनिमल्स भी है। और फिर एवरी लिविंग थिंग संगठन है, जो बहुत बढ़िया है। और एक बयान है जो कुछ साल पहले, पाँच साल पहले या उससे भी पहले तैयार किया गया था, जिस पर मैंने हस्ताक्षर किए हैं, और बहुत से अन्य लोगों ने भी हस्ताक्षर किए हैं।

यह सबसे संतुलित, बाइबिल आधारित, उचित बात है जो मैंने बाइबिल आधारित ईसाई दृष्टिकोण से पशु कल्याण और पशु उपचार की नैतिकता पर एक तरह का व्यवस्थित बयान के रूप में देखा है। यह अच्छी बात है। तो, इस मुद्दे पर हमारी चर्चा यहीं समाप्त होती है।

यह डॉ. जेम्स स्पीगल हैं जो ईसाई नैतिकता पर अपना व्याख्यान दे रहे हैं। यह सत्र 18 है, पशु अधिकार।